रात्रि क्लास 31/10/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

कानपुर में जो बच्चे पुरुषार्थ करते हैं, वह अच्छा है। ख्यालात अच्छी है। तुम जो बच्चे यहाँ बैठे हो नम्बरवार तो कहेंगे ना। बाप भी ऐसे ही कहेंगे, टीचर भी ऐसे ही कहेंगे, गुरु भी ऐसे ही कहेंगे। तुम समझते हो हमको तो पारलौकिक बाप मिला है। हम सभी आत्माओं का बाप आया हुआ है। तुमको अपने आत्मा का बाप ही याद आता है। सतयुग में है एक बाप। कलियुग में दो बाप और संगम पर है तीन बाप। उसमें भी वरसा तुम बच्चों को बेहद के बाप से मिलता है। पहले लौकिक बाप से मिलता आया। अभी फिर बेहद के बाप से मिलता है। नामीग्रामी है दो। एक पारलौकिक एक लौकिक। बाकी जिससे वरसा नहीं मिलता उनको नामी–ग्रामी कैसे कहेंगे। उनको दलाल भी कहते हैं सद्गुरु मिला दलाल के रूप में। कितने आत्माओं के साथ सौदा होता है। कितनी कमीशन मिलती होगी। कोई गिनती कर न सके। एक दलाली एक अपना पुरुषार्थ। यह सभी समझने की बातें हैं। बच्चे समझते हैं जितना हो सके कहाँ रहा हुआ है तो जितना मिले वह लेवे। नहीं तो सभी खत्म हो जावेंगे। मनुष्य अभी तो मौत के लिए विश्वास नहीं करते हैं; परन्तु जब मौत आवेगा उस समय कर कुछ न सकेंगे। अभी तुम अच्छी रीत जानते हो स्थापना होती है और विनाश होता है। स्थापना में कितने थोड़े मनुष्य होते हैं। सारी दुनिया विनाश हो जावेगी। बाप कहते हैं मैं बांधा हुआ हूँ। बच्चों को नई दुनिया में सभी कुछ नया देना है। यहाँ तो कुछ भी नहीं है। वहाँ तो तुम्हारा एक मकान सारी अमेरिका के भेंट में होगा। इतनी मिलकियत होगी जो बात मत पूछो। जबकि 2500 वर्ष बाद जब भक्ति शुरू हुई है मंदिर बनाया तो क्या2 ले गये। तो सतयुग में क्या न होगा। तुम जानते हो यह कोई बड़ी बात थोड़े ही है। हर 5000 वर्ष बाद बाबा द्वारा हमको बादशाही मिलती है। बाबा कहा तो फिर वह कच्चा–पक्का हो सकता है क्या! बाप का कब संशय और निश्चय होता है क्या! यहाँ माया बाप में संशय दिलवा देती है। आत्माओं का बाप है। सभी पुकारते हैं गाड फादर। परमपिता। संशय की तो बात ही नहीं; परन्तु माया क्या कर देती है। फादर कह फिर कह देते हाजरा हजूर है। बाबा को फीलिंग आती है यह तो मैडचेप्स की दुनिया है। बिल्कुल ही जट हैं। बाप ऐसे बड़े में तन में प्रवेश नहीं करते हैं जो सन्यास ही कर न सके। इसलिए ड्रामा प्लैन अनुसार साधारण तन ही मुकर्रर है। यह बेहद का ड्रामा समझने लायक हैं। तुम ऐसे समझते हो जैसे कि तुमने अनेक बार देखा है और पार्ट बजा रहे हो। एक आत्मा में इतना 84 का पार्ट नुँधा हुआ है। कितना वन्डरफुल है। कुदरती ही कहेंगे। तुमने कब सुना न होगा यह ड्रामा है। आत्मा में 84 का पार्ट नूँधा हुआ है।

तुम बहुत ही लक्की सितारे हो। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा, ज्ञान सितारे; क्योंकि तुम बहुत सर्विस करते हो। बाप दादा इतनी सर्विस नहीं करते हैं। तुम लक्की सितारे सर्विस करते हो। कौन जास्ती मेहनत करते हैं? (बाबा) फिर तुम स्टार्स को लक्की क्यों कहते! बच्चे लक्की होते हैं ना। तुम बच्चे मेहनत जास्ती करते हो। इतने सभी को लाया किसने? तुम बहुतों का कल्याण करते हो। बाप तुम्हारी कायदे अनुसार महिमा करते हैं। खुदा एक है। बाकी सभी है खुदाई खिजमतगार। तुमको तो हज़ारों लाखों को परिचय देना है। झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा ना। अभी बच्चों को बाकी थोड़ी मेहनत करनी है। यहाँ जैसे ताजे हो जाते हैं। फिर बाहर में बहुतों का संग हो जाता है यहाँ तुमको भासना अच्छी आती है। बाप बैठ सम्मुख सुनाते हैं। जो तुमको सम्मुख सुनाते हैं वह फिर हो जाता है बासी। यहाँ डायरेक्ट जो मजा आता है वह वहाँ नहीं आवेगा। बुद्धि ऐसी कहती है। तुम जानते हो बाप दादा आया हुआ है। हमको खुद बैठ पढ़ाते हैं। समझा जाता है ड्रामा अनुसार जो पास्ट हुआ ठीक। भक्तिमार्ग में दर्शन करने जाते हैं। फिर उस तरफ पीठ नहीं देते हैं। यहाँ तो वह कोई नहीं। बाप है ना यह हम ही जानते हैं। शिव का मंदिर है लोटी चढ़ाकर फिर पीठ तो आटोमेटकली आ ही जाती है। भक्तिमार्ग में बहुत संशय आदि होते हैं। यहाँ कुछ भी नहीं। इकट्ठे रहते हैं। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।